पाठ 2

लव-कुश

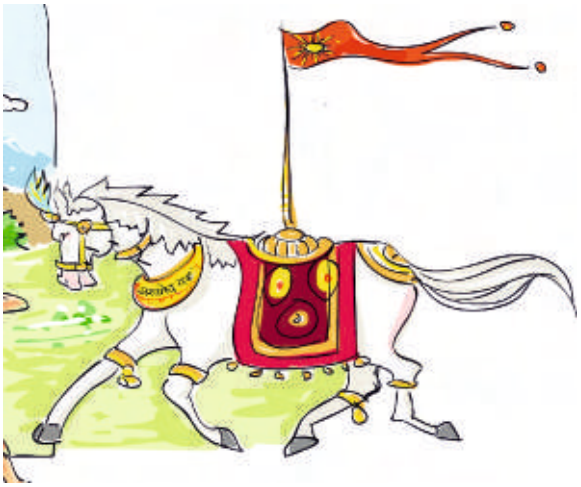

लव और कुश बड़े होनहार बालक थे। उनका जन्म तमसा नदी के किनारे वाल्मीकि आश्रम में हुआ था। वे अपनी माता सीता के साथ इसी आश्रम में रहते थे। बाल्यकाल में स्वयं महर्षि वाल्मीकि ने उनका पालन–पोषण किया तथा उन्हें संपूर्ण विद्याओं का ज्ञान दिया।

लव–कुश में क्षत्रिय के सभी गुण विद्यमान थे। छोटी–सी अवस्था में वे शस्त्र चलाना सीख गए थे। बाण चलाने में तो वे बहुत ही निपुण थे। उनका निशाना अचूक था। वे बड़े वीर और साहसी थे।

गुरु वाल्मीकि उनको नित्यप्रति रामायण की कथा सुनाया करते थे। उन्होंने रामायण की कथा कंठस्थ कर ली थी। रामायण की कथा का गान करना, गुरु की आज्ञा का पालन करना और मुनि कुमारों के साथ खेलना उनका नित्यकर्म था।

एक दिन सीता ने आश्रम के बाहर कुछ शोर सुना तो उस तरफ दौड़ीं। रास्ते में ही कुश मिल गया। उसने उन्हें बताया कि आश्रम में एक सुंदर घोड़ा आ गया है। उसे हमने पकड़ लिया है और एक पेड़ से बाँध दिया है। ''घोड़ा! किसका घोड़ा? यहाँ कैसे आ गया? चल देखूँ तो!'' कहती हुई सीता कुश के साथ उस स्थान पर पहुँची। घोड़ा सोने के आभूषणों से सज्जित था। उसकी गर्दन में एक स्वर्णपत्र लटक रहा था। स्वर्णपत्र पर अंकित था, 'यह राजा रामचंद्र के अश्वमेध यज्ञ का अश्व है।' यह देखकर सीता घबरा गई। सीता ने कहा, ''तुम इसे शीघ्र छोड़ दो।''

लव ने कहा ''हम इसे नहीं छोड़ेंगे, यह बहुत सुंदर है।''

''तुम नहीं जानते इसके पीछे सेना होगी'' सीता ने कहा।

''कोई भी क्यों न हो। हम इसे नहीं छोड़ेंगे। इसे हमने पकड़ा है। यह हमारा है।'' कुश बोला।

सीता ने भय दिखाते हुए कहा–''इसे छोड़ दो नहीं तो युद्ध होगा।''

''हम युद्ध से नहीं डरते।'' लव ने निडर होकर उत्तर दिया।

''हम पुरुषार्थी हैं। आपने ही तो हमें शिक्षा दी है कि पुरुषार्थी युद्ध से भी नहीं डरते। फिर आप हमें भय क्यों दिखा रही हैं?'' कुश ने लव के स्वर में स्वर मिलाकर कहा।

सीता धर्म संकट में पड़ गई। वह महर्षि वाल्मीकि को बुलाने चली गई। क्या पिता पुत्र में युद्ध होगा? सीता अज्ञात अनर्थ की आशंका से सिहर उठी।

'सीता के जाने के बाद एक सैनिक वहाँ आया। वह लव से बोला ''बालक, यहाँ अश्वमेध का अश्व तो नहीं आया ? ''

कुश ने उत्तर दिया–''देखते नहीं, वह पेड़ से क्या बँधा है?'' सैनिक घोड़े की तरफ बढ़ा। लव ने उसे ललकारा ''घोड़ा मत खोलना। इसे हमने पकड़ लिया है, यह हमारा है।''

कैसी बातें करते हो, बालको! यह भी कोई खेल है। अरे! यह राजा राम के अश्वमेध यज्ञ का अश्व है। इसे वही पकड़ सकता है जो राम से युद्ध करने को तैयार हो। 'तुरंत ही कुश ने उत्तर दिया,–'हमें भय क्या दिखाता है रे!'

सैनिक को बालकों की बातें बालहठ लगीं। वह घोड़ा खोलने के लिए आगे बढ़ा। कुश ने उससे कहा, ''देखो सैनिक हम नहीं चाहते कि तुम हमारे बाणों से मारे जाओ। इसलिए घोड़ा खोलने का प्रयास मत करो। चुपचाप लौट जाओ।'' सैनिक नहीं माना।

लव–कुश ने युद्ध के लिए ललकारा। सैनिक ने लव–कुश पर एक बाण छोड़ा। लव ने बाण से दो टुकड़े कर दिए। दोनों ओर से बाण चलने लगे। अंत में लव–कुश ने सैनिक को हरा दिया। उन्होंने सैनिक के दोनों हाथ पीछे की ओर बाँध दिए। फिर उससे कहा, 'जाकर अपने सेनापति से कहो कि सेना लेकर लौट जाए और किसी दूसरे घोड़े का प्रबंध कर ले।' सैनिक चला गया।

लव–कुश सेना को रोकने के लिए चल दिए। सामने से उन्हें एक विशाल सेना आती दिखाई दी। आगे–आगे रथ पर सेनानायक सवार था। राम ने लक्ष्मण के पुत्र चंद्रकेतु को अश्व की रक्षा का भार सौंपा था। वह इस सेना का नायक था।

लव–कुश को देखकर चन्द्रकेतु रथ से उतर कर उनके पास आया और बोला, "तुम राम के अश्वमेध के अश्व को शीघ्र छोड़ दो अथवा मेरे साथ युद्ध करो।"

"वीर! हम वाल्मीकि के शिष्य हैं, हम कायर नहीं हैं। हम यूँ ही अश्व को नहीं छोड़ेंगे। हमसे युद्ध करो और छुड़ा लो।" लव ने जृम्भकास्त्र छोड़ा। सारी सेना मूर्तिवत हो गई। इधर सीता महर्षि वाल्मीकि के पास पहुँचकर घटना के बारे में बता ही रही थी कि एक तपस्वी आया और हाँफते हुए बोला, ''महर्षि शीघ्रता कीजिए। लव–कुश के बाणों से वीर लक्ष्मण मूर्छित हो गए हैं।''

सीता यह सुनते ही व्याकुल हो उठी। महर्षि वाल्मीकि थोड़ा मुस्कुराए। फिर सीता से बोले, "दुःखी मत हो बेटी, जो कुछ हो रहा है, शुभ ही है।''

उधर अयोध्या से कुछ दूरी पर विशाल यज्ञशाला बनी थी। आवश्यक तैयारियाँ चल रही थीं। राम प्रसन्न थे कि अश्वमेध यज्ञ का अश्व अब तक बिना रोक–टोक के बढ़ा चला जा रहा था। इतने में एक सैनिक घबराया हुआ यज्ञशाला में आया। राम को सादर सिर झुकाकर बोला, "महाराज, सारे देश का भ्रमण करने के बाद अश्व अयोध्या लौट रहा था, तब वाल्मीकि आश्रम के लव और कुश नामक दो बालकों ने उसे पकड़ लिया। हमने उन्हें समझाया, वे नहीं माने। आखिर युद्ध करना पड़ा। वे साधारण बालक नहीं हैं, महाराज! उनके बाणों से हमारी सेना के अनेक वीर मूर्छित हो गए। वीर लक्ष्मण भी मूर्छित हो गए हैं।"

यह सुनते ही राम रथ पर सवार हो महर्षि वाल्मीकि के आश्रम पहुँचे। वे दोनों बालकों से बोले, ''मुनि बालको! मेरे अश्व को शीघ्र छोड़ दो।'' पर बालक कहाँ मानने वाले थे! राम से भी युद्ध करने को तैयार हो गए। इतने में सीता महर्षि वाल्मीकि को लेकर वहाँ पहुँची। राम को सामने देखकर वाल्मीकि ने कहा, "लव–कुश, तुम मुझसे अपने पिता के बारे में जानना चाहते थे। यही तुम्हारे पिता हैं, अयोध्या के राजा राम।'' यह सुनकर राजा राम ने लव–कुश को बाहों में भर लिया। मिलन के इस अद्भुत दृश्य को देखकर वाल्मीकि के नेत्रों से हर्ष के आँसू बह निकले।

शब्दार्थ

होनहार	–	अच्छे लक्षणों वाला	सिहरना	–	काँपना
ललकारना	–	चुनौती देना	अश्वमेध	–	एक प्रसिद्ध यज्ञ
अनर्थ	–	बुरा होना, नुकसान	यज्ञशाला	–	यज्ञ करने का स्थान

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

स्वर्णपत्र, आश्रम, वाल्मीकि, महर्षि

सोचें और बताएँ

1. लव–कुश कहाँ रहते थे?
2. लव–कुश के गुरुजी का क्या नाम था?
3. लव–कुश के पिता कौन थे?

लिखें

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लव–कुश किस शस्त्र को चलाने में निपुण थे?
2. आश्रम में किसका घोड़ा आ गया था?
3. ''मुनि बालको, मेरे अश्व को शीघ्र छोड़ दो।'' यह किसने किससे कहा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लव–कुश के दैनिक क्रिया कलाप क्या थे ?
2. कैसे पता चला कि आश्रम में आया घोड़ा अश्वमेध यज्ञ का है ?
3. राम प्रसन्न क्यों थे?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. सीता कब और क्यों संकट में पड़ गई?
2. लव–कुश और सैनिक के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

1. लव–कुश में दोनों पद प्रधान हैं क्योंकि दोनों पद संज्ञा हैं। **जिस समास में दोनों पद प्रधान हों उसे द्वंद्व समास कहते हैं।** उनका समास विग्रह करने पर योजक चिह्न के स्थान पर 'और' शब्द लिखा जाता है जैसे लव और कुश।

   आप भी ऐसे आठ पद लिखिए जिनमें दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर बीच में 'और' शब्द आता हो।
2. 'लक्ष्मण' तत्सम शब्द है। 'लक्ष्मण' का तद्भव शब्द 'लखन' होता है। नीचे लिखे तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए ।

तत्सम शब्द

स्वर्ण, अष्ट, गृह, चंद्र, मूर्ति

इस तरह के अन्य तत्सम शब्द छाँटकर उनके तद्भव रूप लिखिए।

संस्कृत के जो शब्द मूल रूप में हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। मूल रूप से संस्कृत से आए, मगर अब कुछ बदलाव के साथ हिंदी में प्रयुक्त शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं– जैसे 'नासिका' व 'दुग्ध' तत्सम हैं और उनसे बने शब्द क्रमशः 'नाक' और 'दूध' तद्भव है।

3. विराम का अर्थ होता है– रुकना। हम बातचीत करते समय भावों–विचारों के अनुरूप बीच–बीच में रुकते हैं। **भाषा में बीच–बीच में रुकने के लिए कुछ विशेष चिह्न होते हैं। उन्हें विराम–चिह्न कहते हैं।** कुछ विराम–चिह्नों का परिचय इस प्रकार है –

क्र.स.	चिह्न	नाम	प्रयोग का आधार
1	।	पूर्णविराम	इसे वाक्य पूरा होने पर लगाते हैं।
2	;	अद्र्धविराम	जहाँ पूर्ण विराम से आधा रुकना हो।
3	,	अल्पविराम	जहाँ पूर्ण विराम का एक चौथाई समय रुकना हो।
4	?	प्रश्नवाचक	कुछ पूछने का भाव होने पर।
5	–	योजक	जहाँ एक शब्द को दूसरे शब्द से जोड़ने की अपेक्षा हो।
6	!	विस्मयादि बोधक	हर्ष, शोक, आश्चर्य या दुःख प्रकट करने वाले शब्द के बाद।
7	––	विवरण चिह्न	विवरण देने के लिए।
8	" "	उद्धरण चिह्न	किसी के कथन पर।
9	' '	अवतरण चिह्न	किसी नाम की ओर ध्यानाकर्षण अपेक्षित हो तो उस अंश के लिए यह चिह्न लगता है।

उचित विराम–चिह्न लगाकर पुनः लिखिए–

लव–कुश ने चन्द्रकेतु से कहा वीर हम वाल्मीकि के शिष्य हैं तुम्हारा परिचय क्या है

पाठ से आगे

1. रामायण की कथा का गान करना, गुरु की आज्ञापालन करना और मुनि कुमारों के साथ खेलना लव–कुश का दैनिक कार्य था। आप दिनभर क्या–क्या कार्य करते हैं? लिखिए।
2. यदि लव–कुश अश्व को सैनिक के कहने पर छोड़ देते तो क्या होता ?
3. आपके अनुसार बच्चों में कौन–कौनसे गुण होने चाहिए?

तब और अब

पुराना रूप	सुन्दर	झण्डा	युद्ध
मानक रूप	सुंदर	झंडा	युद्ध

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

हे अर्जुन! तुम्हारा कर्म का ही अधिकार है। कर्म के फल में तुम्हारा अधिकार कभी नहीं है। अर्थात हमें बिना फल की अपेक्षा करते हुए कर्म करना चाहिए।

केवल पढ़ने के लिए

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद बेलूर मठ के निर्माण कार्य और शिक्षादान के कार्य में बहुत व्यस्त थे। निरंतर भाग–दौड़ और कठिन श्रम करने के कारण वे अस्वस्थ हो गए थे। चिकित्सकों ने उन्हें जलवायु परिवर्तन तथा विश्राम करने पर जोर दिया। विवश होकर वे दार्जिलिंग चले गये। वहाँ उनके स्वास्थ्य में धीरे–धीरे सुधार हो रहा था। तभी उन्हें समाचार मिला कि कोलकाता में प्लेग व्यापक रूप से फैल गया है। प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो रही है। यह दुखद समाचार सुनकर क्या महाप्राण विवेकानंद स्थिर रह सकते थे? वे तुरंत कोलकाता लौट आए और उसी दिन उन्होंने प्लेग रोग में आवश्यक सावधानी बरतने का जनसाधारण को उपदेश दिया। अपने साथ तमाम संन्यासियों और ब्रह्मचारियों को लेकर वे रोगियों की सेवा में जुट गए। कोलकाता में भय तथा आंतक का राज्य फैला था। स्त्री–पुरुष अपने बच्चों को लेकर प्राण बचाने के उद्‌देश्य से भागे जा रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने प्लेग रोग से बचाव के संबंध में कठोर नियम जारी कर दिया था। उससे लोगों में भारी असंतोष था। इस परिस्थिति का सामना करने की भारी चुनौती स्वामी जी के सामने थी। इस कार्य में कितने धन की आवश्यकता होगी और वह कहाँ से आएगा, इस बात की चिंता करते हुए किसी गुरुभाई ने स्वामी जी से प्रश्न किया, ''स्वामी जी, रुपये कहाँ से आएँगे?'' स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया, ''यदि आवश्यकता हुई तो मठ के लिए खरीदी गई जमीन बेच डालेंगे। हजारों स्त्री–पुरुष हमारी आँखों के सामने असहनीय दुःख सहन करेंगे और हम मठ में रहेंगे? हम संन्यासी हैं, आवश्यकता होगी तो फिर वृक्षों के नीचे रहेंगे, भिक्षा द्‌वारा प्राप्त अन्न–वस्त्र हमारे लिए पर्याप्त होगा।''

स्वामी जी ने एक बड़ी–सी जमीन किराये पर ली और वहाँ पर कुटिया निर्माण की। जाति, वर्ण का भेद छोड़ प्लेग के असहाय मरीजों को वहाँ पर लाकर उत्साही कार्यकर्तागण सेवा कार्य में रत हुए। स्वामी जी स्वयं भी उपस्थित रहकर सेवा कार्य करने लगे। शहर की गंदगी साफ करना, औषधियों का वितरण करना, दरिद्र नारायणों की अति उत्साह से सेवा करने में सभी कार्यकर्ता मन से लग गए। 'यत्र जीवः तत्र शिवः' मंत्र के ऋषि विवेकानंद अपनी सेहत की परवाह न करते हुए स्वदेशवासियों को शिक्षा देने लगे कि नर को नारायण मान कर सेवा करना मानव धर्म है।